जल, वायु और अन्न

डॉ. सेवाराम नन्दवाल
विजय नगर, इन्दौर

राज दरबार में तीन मुजरिम उपस्थित किए गए। राजा ने उनके अपराध जानना चाहे। सिपाही ने बताया–'हुजूर ये तीनों नगर के मुख्य मार्ग पर हंगामा मचा रहे थे। बादशाह ने त्यौरियां चढ़ाते हुए पूछा–'किस बात पर?' सिपाही ने कारण बतायाः–'ये तीनों स्वयं को एक दूसरे से बढ़ा चढ़ाकर बता रहे थे। तीनों आपस में तकरार कर रहे थे कि मैं तुमसे बड़ा, श्रेष्ठ और महान हूँ।

बादशाह ने पहले व्यक्ति से पूछा–'हाँ तुम बताओ, किस आधार पर स्वयं को महान घोषित कर रहे थे? आखिर कौन सा हुनर, कौन सा बेशकीमती खजाना है तुम्हारे पास, जिसके दम पर स्वयं को शक्तिमान बता रहे हो? पहले ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत किया–'हुजूर मेरे पास वह खास चीज है जो इंसान की बुनियादी आवश्यकता है। मनुष्य क्या अन्य सभी प्राणियों, वनस्पति, खेती और अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए मैं सर्वाधिक अहम् हूँ।' बादशाह ने उसकी ओर घूरते पूछा–'आखिर कौन सी नायाब वस्तु है तुम्हारे पास, उसका नाम जानने को हम बेताब हैं।' 'मेरे पास संसार की सबसे कीमती और अनमोल वस्तु है। ऐसी वस्तु जिसके बगैर किसी का कार्य नहीं चल सकता'–उसने गर्वोक्ति की। 'उस अनमोल चीज का नाम तो बताओ'–बादशाह ने अधीरता प्रदर्षित की।

'हुजूर मेरे पास जल है, मैं पानी हूं'–उसने दृढ़ स्वर में गर्वोक्ति की। बादशाह ने उसकी अहमियत को स्वीकारते कहा–'बेशक तुम दुनिया की सबसे नायाब और जरुरी वस्तु हो, तुम्हारा महत्व सर्वाधिक है, तुम्हारी शक्ति के आगे हम सिजदा करते हैं, लेकिन अन्य दो की दलील सुने बगैर हम तुम्हें सर्वशक्तिमान का खिताब नहीं दे सकते। ''ठीक है जहांपनाह'' 'जल' ने सिर झुकाते कहा।

बादशाह दूसरे मुजरिम की तरफ मुखातिब हुए–'तुम बताओ तुम्हारे पास ऐसा क्या खास है जिसकी ताकत पर अकड़ते हुए खुद को सर्वश्रेष्ठ के खिताब का दावेदार मान रहे हो?' उस बलवान काया ने अपने पक्ष में बताया–'मैं अन्न, भोजन हूं, खाद्य पदार्थ.....शरीर का ईंधन। मुझे ग्रहण करने पर ही यह दुनिया चलायमान है। प्रत्येक प्राणी के लिए मैं खासमखास हूं।' बादशाह विचारमग्न होते बोले–'तुम्हारा कथन सही प्रतीत होता है। बिना भोजन के कोई जीवित नहीं रह सकता। तुम्हारी अहमियत हम तहेदिल से स्वीकार करते हैं।'

अन्न ने गर्व से अपना सीना फुलाते आग्रह किया–'मैं न कहता था कि अपने गुण, खासियत के कारण मैं हम सब में सर्वाधिक महत्वपूर्ण हूँ, सबकी पहली पसंद हूँ। अब आप अविलंब मुझे शक्तिमान का ताज पहना दीजिए। 'रुको अभी, इतनी जल्दी क्या है, इस तीसरे किरदार की बात भी सुन लें–'बादशाह बोले। 'ठीक है हुजूर'–अन्न ने करबद्ध कहा।

तीसरी काया जो सर्वाधिक हल्की–फुल्की, कागजी दिख रही थी और बमुश्किल अपने पैर जमाए थी, लगता था अब उड़ी तब उड़ी। बादशाह ने नरम रुख अपनाते पूछा–'हां बताओ तुम किस आधार पर खुद को श्रेष्ठ, ताकतवर बताने पर तुले हो?' 'मैं वह हूँ हुजूर जो सबकी नस–नस में समाया हूँ, सबके लिए बेहद उपयोगी हूं। मेरे बिना पृथ्वी पर जीवन नामुमकिन है'–उसने गर्वपूर्वक कहा। 'कौन हो अपना परिचय बताओ'–बादशाह ने पूछा। 'हुजूर मैं हवा हूं, प्राणवायु, मैं सर्वत्र मौजूद हूं, कण–कण में व्याप्त, ईश्वर की तरह'' 'उसने आगे बताया।

''हूँ, बात तो तुम्हारी सोलह आने सही लगती है एक तरह से देखा जाए तो तुम तीनों खासमखास लगते हो, एक से बढ़कर एक, कोई किसी से कम नहीं''–बादशाह ने तारीफ के पुल बाँधे। 'जहांपनाह बताइए हम में सर्वाधिक महत्वपूर्ण, शक्तिमान कौन है'' तीनों ने एक स्वर में पूछ लिया।

अब बादशाह अपने दरबारियों की ओर उन्मुख होकर पूछने लगे–'क्या बता सकते हो कि बिना भोजन के आप लोग कितने दिन जीवित रह सकते हो?' सबके उत्तर भिन्न थे। किसी ने बताया एक दिन, किसी ने दो दिन तो किसी ने तीन दिन। बादशाह सलामत सहमत होते बोले–'हां ठीक है दो–चार दिन से ज्यादा कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता। अब यह बताओ बिना जल के तुम कितने दिन जीवित रह सकते हो?' उत्तर में किसी ने कहा.....चार घंटे, किसी ने आठ तो किसी ने सोलह घंटे।

''हाँ सही है पानी के बिना हम कुछ घंटे जीवित रह सकते हैं''– बादशाह ने माना। 'हुजूर मेरे बारे में भी तो दरबार की राय जान लीजिए'–वायु ने स्मरण दिलाया। राजा ने दरबारियों से पूछा–'हाँ बताओ कितने दिन वायु के बिना जीवित रहा जा सकता है?' किसी ने बताया.... दो, मिनट, किसी ने पांच तो किसी ने दस मिनट। 'देखिए हुजूर मैंने सही कहा था कि मैं इन सबसे अहम् हूँ। मेरे बिना कोई प्राणी ज्यादा देर जिंदा नहीं रह सकता, इसलिए मैं और सिर्फ मैं इन दोनों से अग्रणी हूँ, खास हूँ'–वायु ने गर्वोक्ति की।

''मैंने तुम सबकी बात सुनी, अब हमारी बात सुनो, बादशाह बोले,'' तुम तीनों एक दूसरे से ज्यादा बलशाली नहीं वरन् एक दूसरे के पूरक हो, एक दूसरे के बिना अधूरे भी।' बादशाह की इस सटीक प्रतिक्रिया पर तीनों परस्पर मुंह देखने लगे। 'हूँ हम सही फरमा रहे हैं। सिर्फ अकेली हवा ग्रहण कर हम कितने दिन जीवित रह सकते हैं? सिर्फ पानी पीकर कितने दिन? भोजन बनाने–पचाने के लिए भी पानी की आवश्यकता होती है–'बादशाह ने अपनी बात के समर्थन में कहा।

'हुजूर मैं..... वायु ने कुछ कहना चाहा तो बादशाह ने टोक दिया–'नहीं अब कुछ नहीं, अब किसी तर्क की गुंजाइश नहीं। यकीनन तुम तीनों संसार की सबसे अहम् हस्ती हो, मजबूत कड़ी हो, बुनियादी आवश्यकता हो, इस दुनिया को चलाने के लिए तुम तीनों की निस्वार्थ भागीदारी निहायत खास और जरुरी है। एक के बिना दो अधूरे हैं'।

बादशाह के इस निष्कर्ष के आगे सब नतमस्तक हो गए।

पानी की दरकार

मनुष्य, पशु – पक्षियों समस्त वनस्पति जगत खेती बाड़ी, उद्योग धंधे क्या जनता क्या सरकार सबको पानी की दरकार। बिना जल के कुछ मुमकिन नहीं जीते जी, मरकर भी जल से सरोकार सबको पानी की दरकार। प्रकृति से प्रेम उसमें विचरण, ध्यान	निकटता, सजगता ही जल से एकाकार सबको पानी की दरकार। जल है तो जीवन है सब कुछ मनभावन है हरेक की अहं जरुरत साधु हो या मक्कार सबको पानी की दरकार। प्यास लगने पर कुआं खोदने की प्रवृत्ति का कर परित्याग तत्पर रहें सालभर	सबको पानी की दरकार। जल के अभाव में सब रखे रहे जाते सूखे, मुंह में आते प्राण पानी अहम् किरदार सबको पानी की दरकार। जल रहेगा तभी न आने वाला कल रहेगा जीवंत, बरकरार सबको पानी की दरकार। प्रत्येक मुसीबत कुछ सबक सिखाती	साहस से करें सामना कर हर चुनौती स्वीकार सबको पानी की दरकार। सबको पानी की दरकार। हम प्रबुद्ध जीव हैं समय पूर्व जाग्रत हों कल के संकट से बचें निश्चिंतता करे साकार सबको पानी की दरकार। परंपरागत जल–स्त्रोतों की सुधि अवश्य लें साथ वर्षा जल बचाएं वक्त की यही पुकार।।